Toppersnotes
Unleash the topper in you

ग्राम सेवक

ग्राम विकास अधिकारी, पंचायत सचिव
एवं छात्रावास अधीक्षक ग्रेड - II

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर

भाग - 5

राजस्थान का भूगोल, इतिहास व कला संस्कृति एवं राजव्यवस्था

SIERRA INNOVATIONS

राजस्थान का भूगोल

1.	राजस्थान की उत्पत्ति, स्थिति, विस्तार एवं क्षेत्रफल	1
2.	राजस्थान का भौतिक प्रदेश एवं विभाग	5
3.	राजस्थान का अपवाह तंत्र	14
4.	राजस्थान की झीलें	21
5.	राजस्थान की जलवायु	24
6.	राजस्थान में मृदा संसाधन	29
7.	राजस्थान में वन–संसाधन एवं वनस्पति	33
8.	राजस्थान में खनिज सम्पदा	36
9.	राजस्थान में ऊर्जा स्त्रोत	43
10.	राजस्थान में पशुधन	50
11.	राजस्थान में कृषि एवं सिंचाई परियोजनाएँ	54
12.	राजस्थान की जनसंख्या	63
13.	राजस्थान में वन्यजीव एवं इनका संरक्षण	66
14.	राजस्थान में उद्योग	70

राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति

1.	प्राचीन राजस्थान का इतिहास • परिचय • प्राचीन सभ्याताएँ	74 76
2.	मध्यकाल राजस्थान का इतिहास • प्रमुख राजवंश एवं उनकी विशेषताएँ • राजस्थान की रियासतें और अंग्रेजों के साथ संधियाँ	82

3.	आधुनिक राजस्थान का इतिहास	117
	• 1857 की क्रांति	117
	• प्रमुख किसान आन्दोलन	119
	• प्रमुख जनजातिय आन्दोलन	121
	• प्रमुख प्रजामण्डल आन्दोलन	121
	• राजस्थान का एकीकरण	125
4.	राजस्थान कला एवं संस्कृति	
	• राजस्थान के त्यौहार	129
	• राजस्थान के लोक देवता	136
	• राजस्थान की लोक देवियाँ	140
	• राजस्थान के लोक सन्त एवं सम्प्रदाय	142
	• राजस्थान के लोकगीत	146
	• राजस्थान की लोकगायन की शैलियाँ	147
	• राजस्थान के संगीत	147
	• राजस्थान के लोक नृत्य	148
	• राजस्थान के लोकनाट्य	151
	• राजस्थान की जनजातियाँ	153
	• राजस्थान की चित्रकला	156
	• राजस्थान की हस्तकलाएँ	159
	• राजस्थान का साहित्य एवं b l d प्रकार	161
	• राजस्थान की प्रमुख बोलियाँ	165
5.	राजस्थान की स्थापत्य कला	
	• किले एवं स्मारक	167
	• राजस्थान के जिले एवं धार्मिक स्थल	174
	• राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	176
	• राजस्थान का खान–पान एवं वेश–भूषा, आभूषण	180

राजस्थान : राजव्यवस्था

1.	राज्य की कार्यपालिका	184
2.	राज्य की राजनीति	192
3.	सचिवालय	196
4.	संभाग	200
5.	जिला	201
6.	उपखण्ड अधिकारी	204
7.	तहसीलदार	205
8.	पटवारी	206
9.	राज्य निर्वाचन आयोग	207
10.	**RPSC**	208
11.	राज्य सूचना आयोग	210
12.	स्थानीय स्वशासन	212
13.	नगरीय संस्थाएं	217
14.	नगरीय संस्थाएं बोर्ड	222
15.	राज्य वित्त आयोग	224

राजस्थान की उत्पत्ति

अंगारालैण्ड:-
पैंजिया का उत्तरी भाग जिससे उत्तरी अमेरिका, यूरोप और उत्तरी एशिया का निर्माण हुआ है।

गोंडवानालैण्ड:-
पैंजिया का दक्षिणी भाग जिससे दक्षिणी अमेरिका, अफ्रीका, दक्षिणी एशिया, ऑस्ट्रेलिया तथा अंटार्कटिका का निर्माण हुआ है।

टेथिस सागर:-
यह एक भूसन्नति है जो अंगारालैण्ड व गोंडवानालैण्ड के मध्य स्थित है।

Note- **राजस्थान का निर्माण:-**

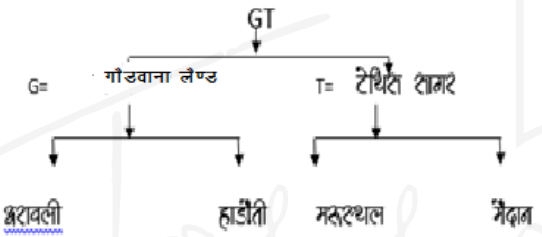

भौगोलिक प्रदेश
अरावली व हाड़ौती भारत के प्रायद्वीप पठार का हिस्सा है जबकि मरूस्थल व मैदानी भाग भारत के उत्तरी विशाल मैदान का हिस्सा है।

राजस्थान : स्थिति, विस्तार एवं आकार

A स्थिति
- भारत → उत्तर पश्चिम
- विश्व / ग्लोब → उत्तर पूर्व
- एशिया → दक्षिण पश्चिम

B विस्तार
- अक्षांश - 23°3' से 30°12' उत्तरी अक्षांश
- देशांतर - 69°30' से 78°17' पूर्वी देशांतर
- क्षेत्रफल - 3,42,239.74 वर्ग कि.मी.

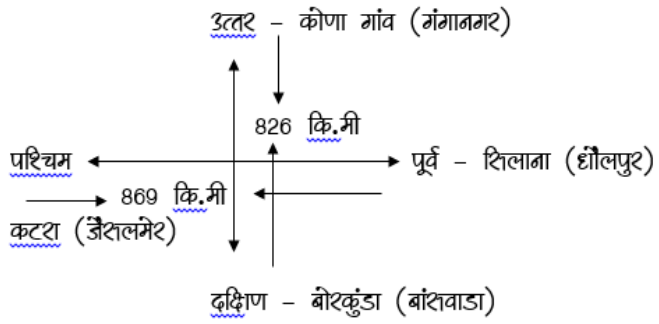

C- आकार
Rhombus – T. H. हैडले ने कहा
विषम कोणीय चतुर्भुजाकार
पतंगाकार

राजस्थान के क्षेत्रफल संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य
1. राजस्थान का क्षेत्रफल 342239.74 वर्ग किमी है ।
2. यह भारत के क्षेत्रफल का 10.41 प्रतिशत है ।
3. विश्व क्षेत्रफल का राजस्थान 0.25 प्रतिशत धारण करता है ।
4. राजस्थान भारत का सबसे बडा राज्य है ।
5. राजस्थान का सबसे बडा जिला जैसलमेर है । 38401 वर्ग किमी इसका क्षेत्रफल है ।
6. जैसलमेर सम्पूर्ण राजस्थान का 11.22 प्रतिशत क्षेत्रफल धारण करता है ।
7. धौलपुर राजस्थान का सबसे छोटा जिला है जिसका क्षेत्रफल 3034 वर्ग किमी है ।
8. धौलपुर सम्पूर्ण राज्य का .89 प्रतिशत क्षेत्रफल धारण करता है ।
9. जैसलमेर धौलपुर से 12.67 गुणा बडा है ।
10. कर्क रेखा राज्य के डुंगरपुर की सीमा को छूते हुए तथा बांसवाडा के मध्य से होकर गुजरती है ।
11. कर्क रेखा की लम्बाई राज्य में 26 किमी है ।
12. कर्क रेखा पर सबसे लम्बा दिन 13 घंटे 27 मिनट का होता है जो 21 जून को होता है । यह कर्क संक्रांति कहलाता है ।
13. राज्य में पूर्व से पश्चिम समय अंतराल 35 मिनट 8 सैकेण्ड का है ।
14. राज्य का मध्य गांव गगराना नागौर है ।

प्रमुख देश		राजस्थान का क्षेत्रफल (बडा)
जर्मनी	-	बराबर
जापान	-	बराबर
ब्रिटेन	-	दोगुना
श्रीलंका	-	5 गुना
इजराइल	-	17 गुना

राजस्थान के क्षेत्रफल के अनुसार सबसे बडे एवं सबसे छोटे जिले

बडे जिले	छोटे जिले
जैसलमेर	धौलपुर
बीकानेर	दौसा
बाडमेर	डुंगरपुर
जोधपुर	प्रतापगढ
नागौर	

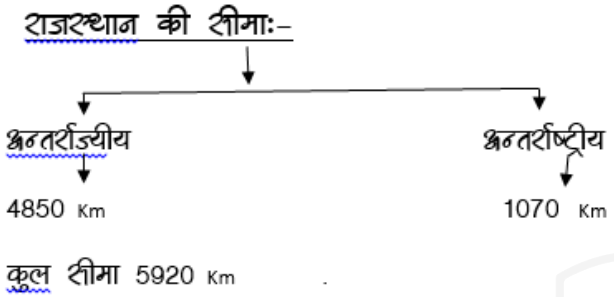

अन्तर्राज्यीय सीमा एवं उन पर स्थित जिले

सीमा- 4850 किमी.

पडौसी राज्य	उनकी सीमा पर राजस्थान के जिले
पंजाब	हनुमानगढ, गंगानगर
हरियाणा	जयपुर, भरतपुर, हनुमानगढ, सीकर, चुरू, झुंझुनु, अलवर
उत्तरप्रदेश	भरतपुर, धौलपुर
मध्यप्रदेश	धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर, भीलवाडा, कोटा, बांसवाडा, बांरा, झालवाड, प्रतापगढ, चितोडगढ
गुजरात	बाडमेर, जालौर, सिरोही, उदयपुर, डुंगरपुर, बांसवाडा

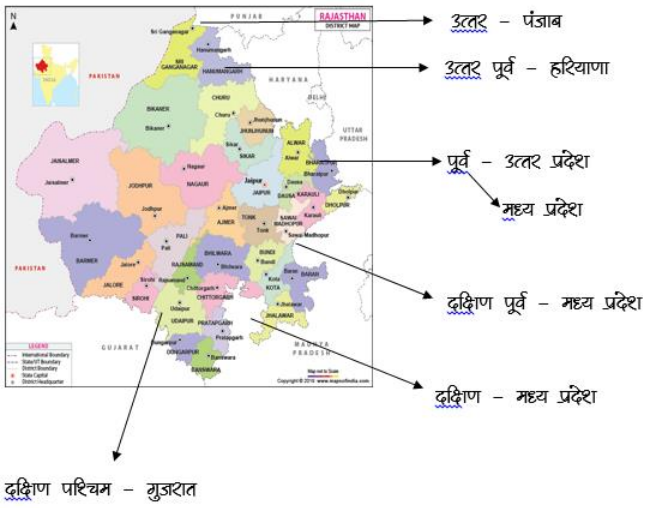

नोटः- (1) राजस्थान के वे जिले जो दो राज्यों के साथ सीमा बनाते हैः-

- हनुमानगढ - पंजाब . हरियाणा
- भरतपुर - हरियाणा . U.P.
- धौलपुर - U.P. + M.P.
- बाँसवाडा - M.P. गुजरात

(2) कोटा व चित्तौडगढः- राजस्थान के वे जिले है जो एक राज्य (M.P.) से दो बार सीमा बनाते हैं।

(3) कोटा :- राजस्थान का वह जिला है जो राज्य के साथ दो बार सीमा बनाता है
वह अविखण्डित है।

(4) चित्तौडगढः- राजस्थान का वह जिला है जो राज्य के साथ दो बार सीमा बनाता
है व विखण्डित है।

(5) भीलवाडाः- चित्तौडगढ को 2 भागो में विखण्डित करता है।

(6) अन्तर्राज्यीय सीमा पर

- 25 जिले : राजस्थान के सीमावर्ती जिले.
- 23 जिले : अन्तर्राज्यीय सीमावर्ती
- 4 जिले : अन्तर्राष्ट्रीय सीमावर्ती
- 2 जिले : अन्तर्राज्यीय व अन्तर्राष्ट्रीय सीमावर्ती (श्रीगंगानगर . बाडमेर)

8 जिले : राजस्थान के वे जिले जो अन्तः स्थलीय (Land locked) सीमा बनाते हैं ।

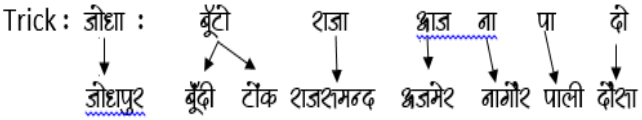

पाली सर्वाधिक 8 जिलों के साथ सीमा बनाता है । जो निम्न है -
बाडमेर, जोधपुर, जालौर, सिरोही, उदयपुर, राजसमंद, अजमेर, नागौर ।

अजमेर :- चित्तौडगढ के बाद राजस्थान का दूसरा विखण्डित जिला

राजसमन्द :- राजसमन्द अजमेर का दो भागों में विखण्डित करता है।
इसका जिला मुख्यालय इसके नाम से नही है।
राजनगर राजसमन्द का जिला मुख्यालय है।

नागौर :- नागौर सर्वाधिक संभाग मुख्यालयों के साथ सीमा बनाता है
(जयपुर, अजमेर, जोधपुर, बीकानेर)

<u>सीमावर्ती विवाद:-</u>

मानगढ हिल्स विवाद:-
स्थिति = बाँसवाडा
विवाद = राजस्थान-गुजरात के मध्य

बजट 2018-19 में इसके विकास के लिए 7 करोड का प्रस्ताव रखा गया है।

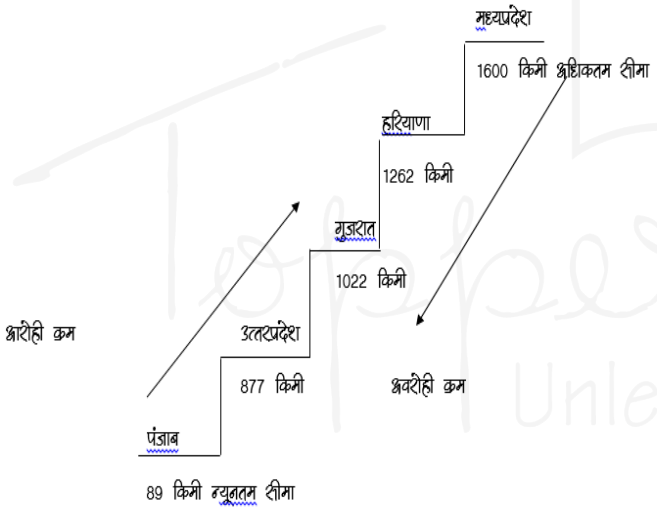

<u>अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा पर स्थित जिले</u>

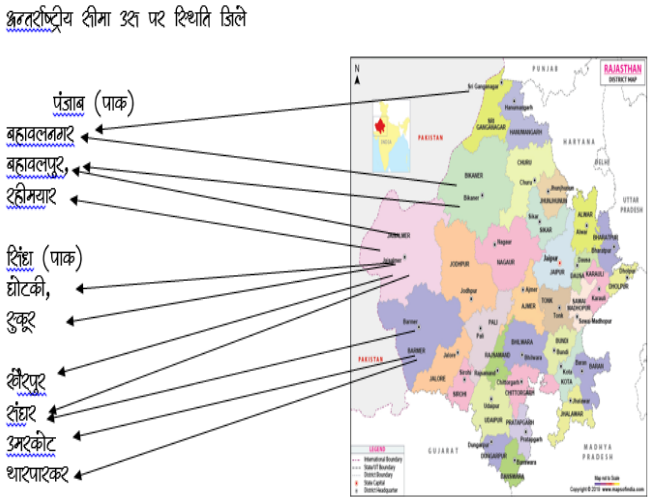

1. पाकिस्तान का बहावलपुर का सर्वाधिक सीमा गंगानगर के साथ बनाता है ।
2. थारपारकर न्यूनतमक सीमा बाडमेर के साथ बनाता है ।
3. पाकिस्तान के 9 जिले भारत के साथ सीमा बनाते हैं ।
4. पाकिस्तान के 6 जिले जैसलमेर के साथ सीमा बनाते हैं ।
5. भारत के 4 जिले पाकिस्तान के साथ सीमा बनाते हैं ।
6. जैसलमेर सर्वाधिक सीमा पाकिस्तान के साथ बनाता है ।
7. बीकानेर सबसे कम सीमा पाकिस्तान के साथ बनाता है ।
8. नाम- सर सिरील रेड क्लिफ रेखा
9. निर्धारण तिथि - 17 अगस्त 1947
10. शुरूआत - हिन्दूमलकोट
11. अंत - शाहगढ(बाडमेर)
12. राजस्थान की कुल सीमा का 18: (1070 किमी.) है।
13. पाकिस्तान प्रान्त राज्य = 2 (पंजाब व सिन्ध)
14. श्रीगंगानगर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर सबसे निकटम जिला मुख्यालय है।
15. बीकानेर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा पर सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय है।
16. धौलपुर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा से सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय है।

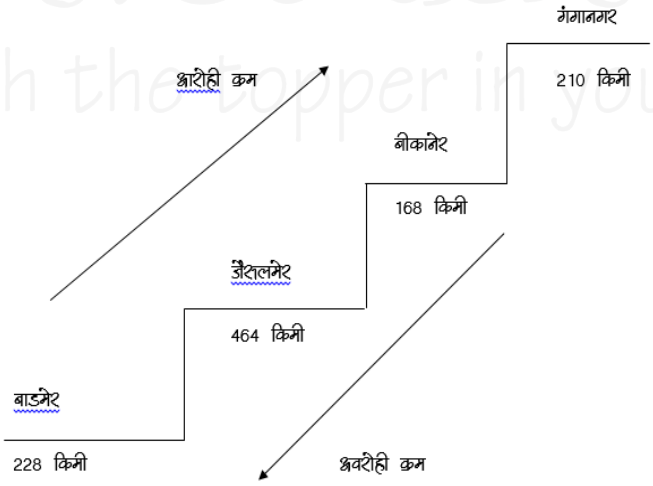

राजस्थान के प्रादेशिक के परिवर्तन का स्वरूप एवं वर्तमान नाम

प्राचीन नाम	बदला स्वरूप	वर्तमान नाम
योद्धेय	जोहयावाटी	गंगानगर
जांगल	भटनेर	बीकानेर
अहिच्छत्रपुर	अहिपुर	नागौर
गुर्जर	गुरजान्ना	मण्डोर–जोधपुर
शाकंभरी सांभर	अजयमेरू	अजमेर
श्रीमाल स्वर्णगिरि	गेलोर भीनमाल	बाडमेर
वल्ल	छुंगल (मांड)	जैसलमेर
अर्बुद	चन्द्रावती	सिरोही
विराट	रामगढ	जयपुर
शिवि	चित्तौड	उदयपुर
कांठल	देवलिया	प्रतापगढ
पालन	दशपुर	झालावाड
व्याघ्रावाट	वांगड	बांसवाडा
जाबालीपुर	स्वर्णगिरि	जालौर
कुरू		भरतपुर, करौली
शौरसेन		धौलपुर
हयहय		कोटा, बूंदी
चंद्रावती		आबू, सिरोही
छप्पन मैदान		प्रतापगढ, बांसवाडा के छप्पन ग्राम समूह
मेवल		डूंगरपुर, बांसवाडा के बीच का भाग
ढूंढाड		जयपुर
थली		चुरू, सरदार शहर
हाडौती		कोटा, बूंदी, झालावाड
शैखावटी		चरू, सीकर, झुंझनू

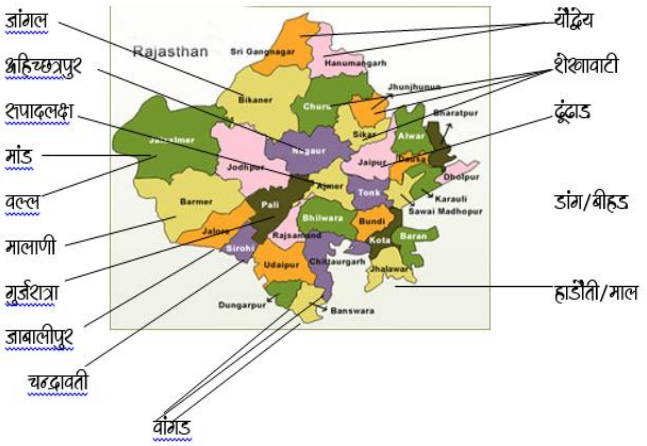

राजस्थान के भौतिक प्रदेश एवं विभाग (Physical Regions & Divisions of Raj)

भूमिकाः भौगोलिक प्रदेशों के अध्ययन में सभी भौतिक, सांस्कृतिक एवं पारिस्थितिकीय पक्षों को संमाहित किया जाता है। किसी भौगोलिक प्रदेश का आधार स्तम्भ है- 'भौतिक प्रदेश'

भौतिक प्रदेश वह विशिष्ट क्षेत्र होता है जिसमें उच्चावच, जलवायु, मृदा, वनस्पति इत्यादि में औसत आन्तरिक समरूपता पायी जाती है।

निष्कर्ष एवं समसामयिक पक्ष : उपर्युक्त के समग्र विवेचन, विश्लेषण एवं परिशीलन के उपरान्त सार रूप में यह निरूपति किया जा सकता है कि वर्तमान में जलवायु परिवर्तन, आधुनिकीकरण, शहरीकरण, औद्योगिकरण निर्वनीकरण, मानवीय हस्तक्षेप इत्यादि के कारण भौतिक प्रदेश की संरचना एवं पर्यावरण में नकारात्मक परिवर्तन हो रहे है जिसे रोकने के लिए धारणीय विकास एवं भौतिक प्रदेशो के संरक्षण की नितान्त आवश्यकता है।

राजस्थान के भौतिक प्रदेशो को उच्चावच एवं धरातल के आधार पर मोटे तौर पर चार भागों में एवं विभिन्न उप विभागों मे विभक्त किया जा सकता है।

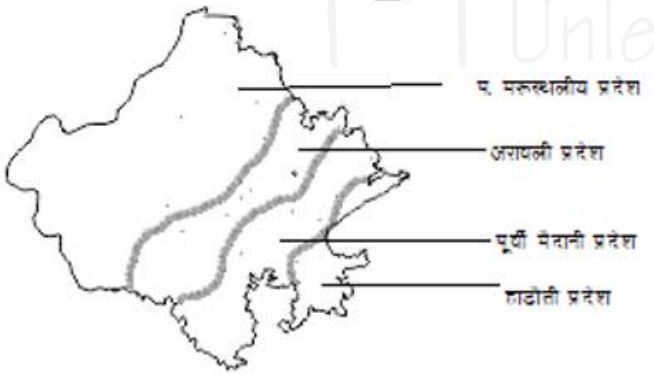

1. पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश - उपविभाजन
   - शुष्क रेतीला प्रदेश (मरूस्थल)
   - लूणी - जवाई मैदान (लूणी बेसिन)
   - शेखावटी प्रदेश (बांगर प्रदेश)
   - घग्घर का मैदान

2. मध्यवर्ती अरावली प्रदेश - उपविभाजन
   - उत्तरी अरावली
   - मध्य अरावली
   - दक्षिणी अरावली

3. पूर्वी मैदानी प्रदेश - उपविभाजन
   - बनास बेसिन
   - चम्बल बेसिन
   - मध्य माही बेसिन (छप्पन का मैदान)

4. दक्षिणी-पूर्वी पठारी प्रदेश (हाडौती प्रदेश) - उपविभाजन
   - अर्द्ध चंद्राकार पर्वत श्रेणियां
   - नदी भ्रमित मैदान
   - शाहबाद का उच्च स्थल
   - झालावाड की पठार
   - डग - गंगधार का उच्च क्षेत्र

भौतिक प्रदेशो की सामान्य जानकारीः-

क्षेत्र	क्षेत्रफल	जनसंख्या	जिले	मिट्टी	जलवायु
मरूस्थल	61.11 या 2/3	40 प्रतिशत	12	बलुई	शुष्क व अर्द्धशुष्क
अरावली	9 प्रतिशत	10 प्रतिशत	13	पर्वतीय या वनीय	उपार्द्र
पूर्वी मैदान	23 प्रतिशत	39 प्रतिशत	10	जलोढ	आर्द्र
हाडौती, दक्षिण पूर्वी	6.89 प्रतिशत	11 प्रतिशत	7	काली या रेगूर	आर्द्र या अति आर्द्र

राजस्थान में भूगर्भीक संरचना भारत के अन्य प्रदेशों की तुलना में विशिष्ट है । यहां प्राचीनतम प्री - कैम्ब्रीयन युग के अवशेष अरावली के रूप में मौजूद है ।

यहां आद्य महाकल्प, पुराजीवी महाकल्प, प्राग्जीवी महाकल्प एवं नवजीवी महाकल्प के साक्ष्य मौजूद है ।

बाप बोल्डर बैड (बाप गांव जोधपुर) - पुराजीवी महाकल्प के परमियन कार्बोनीफैरस युग के अवशेष मिले है जिन्हें हिमवाहित माना जाता है । कुछ गोलाश्म खंडो पर स्पष्ट लकीरों कें चिन्ह सुरक्षित है जो संभवतः हिमवाहित होने के कारण घर्षन से उत्पन्न हुए है ।

भादुरा बालुकाश्म (जोधपुर) – यहां जीवाश्म युक्त बालुकाश्म मिले है जो बाप और भादुरा आस पास मिले है । इन बालुकाश्म का निर्माण सामुद्रिक अवस्था मे हुआ है ।

(I) उत्तरी–पश्चिमी मरूस्थलीय–प्रदेशः–

(i) निर्माणकाल–टर्शयरीकाल (क्वार्टनरी काल में प्लीस्टोसीन) इसे भारत का विशाल मरूस्थल अथवा थार के मरूस्थल के नाम से जाना जाता है ।

इसे मरू प्रदेश का विस्तार लगभग 175000 वर्ग किमी है । जो सम्पूर्ण राजस्थान का 61 प्रतिशत है । इस मरूस्थल का राजस्थान कृषि आयोग के अनुसार सिरोही के अतिरिक्त 12 जिलों मे है । लेकिन वास्तविकता में सिरोही सहित 13 जिलों में है ।

श्री गंगानगर, हनुमानगढ, चुरू, बीकानेर, झुझनु, सीकर, जोधपुर, जालौर, बाडमेर, जैसलमेर, पाली, नागौर ।

राजस्थान में कुल

(ii) विस्तारः– मरूस्थलीय ब्लॉक–85

(a) लम्बाई – 640किमी.

(b) चौडाई – 300किमी.

(c) औसत ऊँचाई– 200–300 मीटर(औसत 250 मी.)

(iii) तापक्रम – ग्रीष्मकाल – 49°C
शीतकाल – -3°C
औसत – 22°C

(iv)वर्षा – 20 से 50 सेंटिमीटर तक होती है ।

(v) वनस्पति – zero fight या शुष्क वनस्पति पाई जाती है ।

(vii) मिट्टी – रेतीली बलुई मिट्टी

(viii) मरूस्थल का ढालः– NE-SW

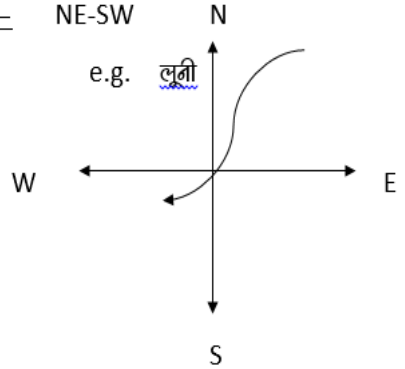

(ix) मरूस्थल का अध्ययनः–

मरूस्थल को अध्ययन की दृष्टि से 2 भागो में बांटा जाता है।

(a) शुष्क मरूस्थल (0-25cm)

(b) अर्द्धशुष्क मरूस्थल OR बांगड प्रदेश (25-50cm)

नोटः–" 25 cm. समवर्षा रेखा" मरूस्थल को शुष्क व अर्द्धशुष्क दो भागों में बॉटती है।

(a) शुष्क मरूस्थलः–

25 cm. से कम वर्षा वाले भौतिक प्रदेश को शुष्क मरूस्थल कहा जाता है ।

शुष्क मरूस्थल को पुनः दो भागो में बॉटा जाता हैः–

बालुका स्तूप मुक्त (41.5%)

कारणः– पथरीला मरूस्थल जिसे "हमादा" कहा जाता है।

बालुका स्तूप युक्त (58.5%)

पवन → मिट्टी → निक्षेपण → बालुका स्तूप

विस्तार = जैसलमेर (max.)
बाडमेर
जोधपुर

नोटः–बालुका स्तूप :–

जब पवन के द्वारा मिट्टी का निक्षेपण किया जाता है तो बनने वाली स्थलाकृति को बालुका स्तूप कहा जाता है जो सर्वाधिक जैसलमेर जिले में है।

बालुका स्तूप के प्रकारः–

		प्रकार	सर्वाधिक
(i)	पवन	अर्द्धचन्द्राकार	बरखान	शेखावाटी(चूरू)
(ii)	पवन	समकोण	अनुप्रस्थ	बाडमेर, जोधपुर
(iii)	पवन	समानान्तर	अनुदैर्ध्य/रेखीय	जैसलमेर

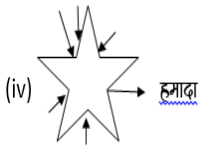

(iv)   हमादा तारानुमा 1. जैसलमेर (max)
2. सूरतगढ़
(श्रीगंगानगर)

- हमादा के चारों ओर स्थित बालूका स्तूपों को तारानुमा बालूका स्तूपों को तारानुमा बालूकास्तूप कहा जाता है।

(v)

पेराबोलिक

- बरखान के विपरीत या हेयरपिन जैसी आकृति का बालूकास्तूप ''पेराबोलिक'' कहलाते है।

नोटः- यह बालूकास्तुप राजस्थान में सर्वाधिक पाए जाते हैं।

(vi) सीफ (Seif)

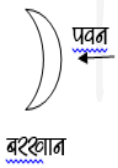

बरखान के निर्माण के दौरान जब पवन की दिशा में परिवर्तन होता है तो बरखान की एक भुजा एक दिशा में आगे की ओर बढ जाती है जिसे सीफ कहा जाता है।

(vii) श्रब काफीसज (Scrub Coppies) :-

मरूस्थल में झाडियों के पास पाए जाने वाले छोटे बालूका स्तूप

 श्रब काफीसज

यह सर्वाधिक जैसलमेर में पाए जाते है ।

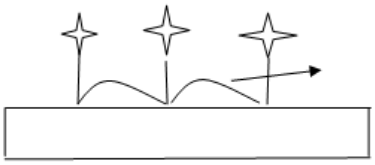

नोटः- 1 बरखान - अनुप्रस्थ
2 सीफ - अनुदैर्ध्य/रेखीय

3 सर्वाधिक बालूका स्तूप - जैसलमेर
सभी प्रकार के बालूकास्तूप - जोधपुर

(b) अर्द्धशुष्क मरूस्थल या वांगड प्रदेशः-

25-50 सेमी वर्षा या शुष्क मरूस्थल व अरावली के मध्य का भौतिक प्रदेश अर्द्धशुष्क मरूस्थल कहलाता है।
इसे अध्ययन की दृष्टि से पुनः 4 भागो में बाँटा जाता है:-
1. लूनी बेसिन
2. नागौर उच्च भूमि
3. शेखावाटी अन्तः प्रवाह
4. घग्घर बेसिन

परिचमी मरूस्थलीय प्रदेश से संबंधित विशेष तथ्य

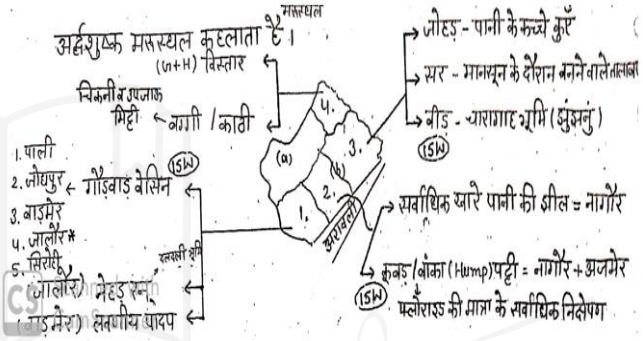

परिचमी राजस्थान में परम्परागत रूप से जल संरक्षण की अनेक पद्धतियाँ पायी जाती है जो हैः-

Short cut- जल खडा है आना बा बेटी जोडने
जल संरक्षण पद्धतियाँ — खडीन — आगोर नाडी बावडी — बेरा या बेरी — जोहड टोबा

1. प्लाया/खडीन/ढाढ झीलः-

खडीन/प्लाया झील → जहाँ पालीवल ब्राहाणों द्वारा की जाने वली कृषि को → खडीन कृषि
↑
अस्थायी पानी की झील

फसल-''रबी''
→ गेहूँ
→ चनो
→ सरसों

सर्वाधिक जैसलमेर (उत्तरी भाग)

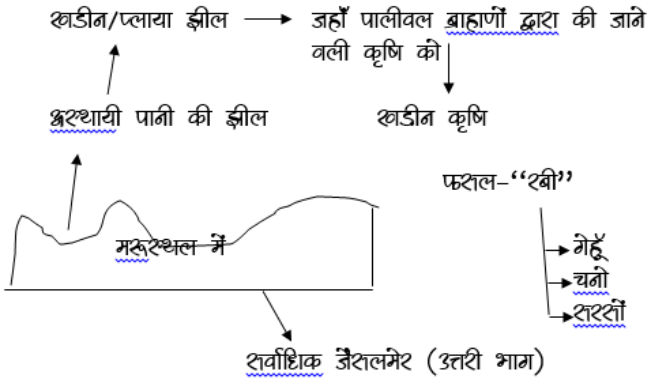

2. आगोरः- घर के आँगन में निर्मित जल संग्रहण के लिए बना टाका या झालरा आगोर कहलाता है।

3. नाडी:- प्राकृतिक गड्ढे में जल का संग्रहण नाडी कहलाता है जिसके जल का उपयोग पशुपालन एवं दैनिक कार्यो के लिए किया जाता है।

4. बावडी:- सामान्यतः सीढीनुमा चोकोर तालाब बावडी कहलाता है।

5. बेरा या बेरी:- खडीन या टोबा या नाडी से रिसने वाले जल के सदुपयोग के लिए इसके चारों ओर छोटे-छोटे कुएँ बना दिये जाते है जिन्हे जैसलमेर के आसपास के क्षेत्रों में बेरा या बेरी कहा जाता है।

6. टोबा:- कृत्रिम रूप से निर्मित गड्ढे में जल संग्रहण टोबा कहलाता है।

7. जोहड या खूँ:- शेखावाटी क्षेत्र में पाये जाने वाले कुएं जोहड या खूँ कहलाते है जो ढोबा या नाडी में रिसने वाले जल का सदुपयोग करने के लिए निर्मित किये जाते है।

पश्चिमी राजस्थान में हरियाली के प्रकार या क्षेत्र
पश्चिमी राजस्थान सामान्यत शुष्क एवं मरूस्थलीय क्षेत्र है फिर भी कहीं-कहीं जल की उपलब्धता के कारण यहाँ हरियाली मिलती है। इस तरह पश्चिमी राजस्थान में हरियाली के भिन्न-भिन्न रूप निम्नांकित है-

1. मरूद्भिद् (**XEROPHYTE**)
अरावली के पश्चिम में पायी जाने वाली कंटीली झाडियाँ एवं वनस्पति मरूद्भिद कहलाती है। इनकी जडे अधिक गहरी तथा पत्तियाँ काँटो के रूप में होती है। जैसे बबूल, कैर, बेर, नागफनी, आक, फोग, खेजडी, खींप, रोहिडा, झरबेरी इत्यादि।

.

2. चाँधन नलकूप:-
जैसलमेर का वह क्षेत्र जहाँ मीठा भूमिगत पानी मिलता है। चाँधन नलकूप कहलाता है। इसे 'थार का घडा' भी कहते है। इसका कारण यहाँ पौराणिक सरस्वती नदी के अवशेष होना बताया जाता है।

3. मरूद्यान या नखलिस्तान(**OASIS**):-
मरूस्थल में वह क्षेत्र जहाँ जल की उपलब्धता होने के कारण वह क्षेत्र हरा-भरा हो जाता है, जैसे चाँधन नलकूप, श्री कोलायत झील।

4. तल्ली/मरहो/बालरून
मरूस्थल में बालूका स्तूपों के मध्य मिलने वाली निम्न भूमि तल्ली/मरहो/बालरून कहलाती है।

5. रन/टाट:-
मरूस्थल में लवणीय, दलदली व अनुपजाऊ भूमि को रन/टाट कहा जाता है। रन सर्वाधित जैसलमेर में पाए जाते है।

नोट:-

प्रमुख रन	स्थान
तालछापर	चूरू
परिहारी	चूरू
फलौदी	जोधपुर
बाप	जोधपुर
थोब	बाडमेर
भाकरी	जैसलमेर
पोकरण	जैसलमेर

(परमाणु परीक्षण 1974 (18 मई) 1998(11,13 मई)

6. प्लाया/खारी झीलें/सैलिना या सैलाइना
बालूका स्तूपों के मध्य निम्न भूमि में जल एकत्रित होने से निर्मित खारी झीलें प्लाया कहलाती है।

7. लाठी सीरीज
जैसलमेर के उत्तर पूर्व में 60 किमी लम्बी भूगर्भीय जल पट्टी लाठी सीरीज कहलाती है। यह क्षेत्र 'सेवण या लीलोण' घास के लिए प्रसिद्ध है।

8. मरूस्थलीकरण/मरूस्थल का मार्च:-
- क्या:- मरूस्थल का आगे बढना/विस्तार
- दिशा:- SW - NE
- विस्तार सर्वाधिक :-हरियाणा
- सर्वाधिक योगदान:- बरखान
  क्योकि इनकी गति या स्थानान्तरण सर्वाधिक होता है।

नोट:-
- Erg (अर्ग) → रेतीला
- रेग → दोनो(रेतीलापथरीला)
- हमादा → पथरीला

निष्कर्षण:-
मरूस्थल में इसी हरियाली के कारण पेड-पोधे जीव जन्तु एवं मानव-जीवन मिलता है। यही कारण है कि थार का मरूस्थल विश्व का सर्वाधिक जैव-विविधता वाला मरूस्थल है ।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य -
मावठ/महावठ:-
भूमध्यसागरीय चक्रवातों या पश्चिमी विक्षोभ से शीतकाल में होने वाली वर्षा मावठ कहलाती है।

यह रबी की फसल विशेषकर गेहूँ के लिए अमृत तुल्य होती है। इस कारण इसे "गोल्डन ड्रॉप्स (Golden Drops) भी कहा जाता है।

समगांवः-

जैसलमेर जिले में अवस्थित पूर्णतः वनस्पतिरहित क्षेत्र है जहाँ फिल्मों की शूटिंग होती है तथा यह एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल भी है। यहां 10 सेमी. बारिश होती है।

आंकलगाँवः-

राजस्थान का एकमात्र "वूड फॉसिल्स पार्क"(लकडी के जीवाश्म का) है। यहाँ 8 करोड वर्ष पुराने जूरासिक काल के लकडी के अवशेष मिले हे। यह राष्ट्रीय मरूउद्यान का ही भाग है।

मरूस्थलीकरणः-

मरूस्थल का निरन्तर प्रसार जिसके कारण भूमि का धीरे-धीरे बंजर होते जाना ही मरूस्थलीकरण कहलाता है। इसे 'मार्च पास्ट ऑफ डेजर्ट' भी कहते है।

लघु मरूस्थल/थलीः-

थार के मरूस्थल का पूर्वी भाग जो कच्छ के रन से बीकानेर तक विस्तृत है, लघु मरूस्थल कहलाता है। यह अपेक्षाकृत नीचा है। इसे बीकानेर के आस-पास के क्षेत्र में इसे थली तथा यहाँ के निवासियों को थलिया भी कहते है।

धरियनः-

जैसलमेर जिले में कम आबादी वाले स्थानों पर पाये जाने वाले स्थानान्तरित बालुका स्तूप धरियन कहलाते है।

सर/सरोवरः-

विशेष रूप से शेखावाटी एवं सामान्यतः पश्चिमी राजस्थान में तालाबों को सर या सरोवर कहा जाता है। जैस-अलसीसर, मलसीसर, कोडमदेसर आदि।

पीवणा -

पश्चिमी राजस्थान में पाया जाने वाला सर्वाधिक विषैला सर्प पीवणा है।

मध्यवर्ती अरावली प्रदेश

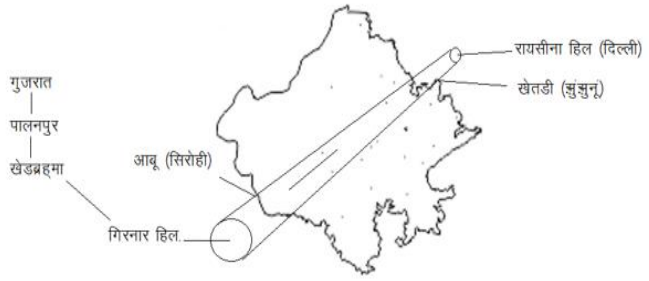

1. विस्तार - इसका विस्तार दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व की ओर, खेड ब्रह्म (गुजरात) से रायसीना हिल्स (दिल्ली) तक 692 किमी है । राजस्थान में इसकी लम्बाई 550 किमी है । इसका विस्तार मुख्यतः 9 जिलों डूंगरपुर, बांसवाडा, सिरोही, उपदयपुर, राजसमंद, चित्तोडगढ, अजमेर, पाली, भीलवाडा में है ।
2. क्षेत्रफल -यह भूभाग राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का 9 प्रतिशत तथा जनसंख्या का लगभग 10 प्रतिशत धारण किये हुए है।
3. इसकी औसत ऊँचाई 930 मी. है।
4. जलवायु एवं वायुदाब- यहाँ उपार्द्र जलवायु पायी जाती है। औसत वायुदाब एवं औसत वायुवेग एवं औसत तापक्रम पाया जाता है।
5. वर्षण- यहाँ 50-80 से.मी. के मध्य वर्षा होती है। 50 सेमी. वर्षा रेखा इसे पश्चिमी मरूस्थल क्षेत्र से अलग करती है।
6. खनिज एंव चट्टानेंः- यहाँ पर तांबा, लोहा, चाँदी, मैंगनीज आदि धात्विक खनिज एवं ग्रेनाइट, नील, सिस्ट इत्यादि प्राचीनतम चट्टानें मिलती है।
7. प्रकृति- गोंडवाना क्षेत्र का यह भाग प्रीकेम्ब्रियन काल में निर्मित एवं अवशेषी वलीत पर्वत माला के रूप में है ।
8. मृदा- यहाॅ पर पर्वतीय मिट्टी तथा पर्वतीय अपरदन से निर्मित काली तथा लाल मिट्टियाँ पायी जाती है ।
9. वनस्पति- यहाँ पर पर्वतीय वनस्पति जिनकी जडे कम गहरी होती है, पायी जाती है तथा यहाँ मुख्यतः मक्का की खेती होती है ।
10. उच्चावच- इस क्षेत्र में पहाड-पहाडी, डूँगर-डूँगरी, दर्रे या नाल पाये जाते है ।

अरावली का अध्ययन

अध्ययन की दृष्टि से अरावली को 3 भागों में बाँटा जाता है:-

	उत्तरी अरावली	मध्य अरावली	दक्षिणी अरावली
विस्तार	जयपुर-झुंझुनू	अजमेर	सिरोही-राजसमन्द
सर्वोच्च चोटी	रघुनाथगढ	टॉडगढ	गुरूशिखर

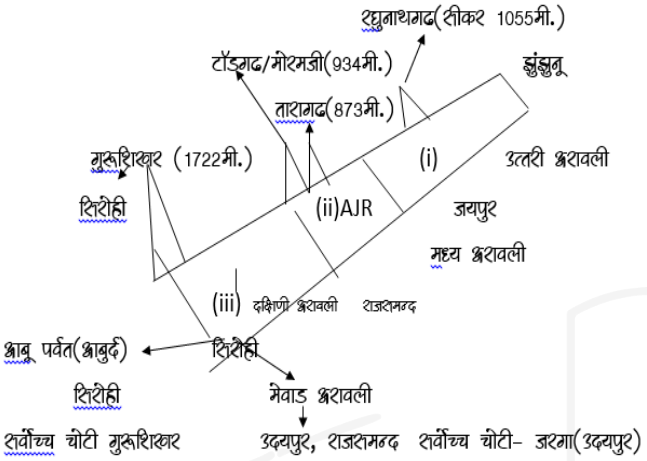

नोट:-

1. अरावली की सर्वाधिक ऊँचाई- सिरोही
   अरावली की सर्वाधिक विस्तार- उदयपुर
2. अरावली का सबसे कम विस्तार व न्यूनतम ऊँचाई- अजमेर

3 अरावली की सर्वोच्च चोटी(अवरोही क्रम में):-

	Trick	चोटी	स्थान	ऊँचाई
1.	गुरू	गुरूशिखर	सिरोही	1722 मी.
2.	रौ	रौर	सिरोही	1597 मी.
3.	दिलरौ	देलवाडा	सिरोही	1442मी.
4.	जरा	जरगा	उदयपुर	1431मी.
5.	आरा	अचलगढ	सिरोही	1380 मी.
6.	कुंभा	कुंभलगढ	राजसमन्द	1224 मी.
7.	रघुनाथ	रघुनाथगढ	सीकर	1055 मी.
8	ऋषि	ऋषिकेश	सिरोही	1017 मी.
9	का	कमलनाथ	उदयपुर	1001 मी.
10	राउजन	राउजनगढ	उदयपुर	938 मी.
11	मोर	मोरझरी/टॉडगढ	अजमेर	934 मी.
12	खों में	खो	जयपुर	920 मी.
13	रा	रायरा	उदयपुर	900 मी.
14	त	तारागढ	अजमेर	873 मी.
15	बोली	बिलाली	अलवर	775 मी.
16	रोज	रोजा भाकर	जालौर	730 मी.
17	बोली	-	-	-

अरावली की नाल/दर्रे:-

पर्वतों के मध्य नीचा और तंग रास्ता जो दो ओर के स्थानों को जोडता है इसे नाल कहा जाता है ।

प्रमुख नाल:-

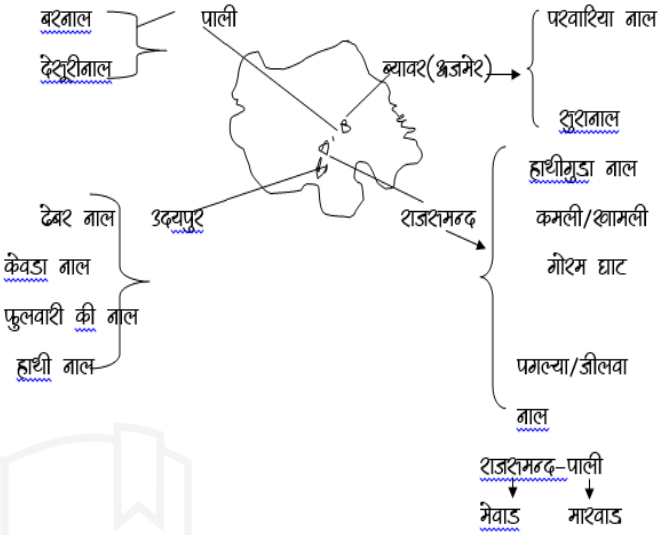

नोट:-

1. अरावली में सर्वाधिक नाल राजसमन्द में स्थित है।
2. फुलवारी नाल अभ्यारण्य से सोम, मानसी, वाकल नदियाँ बहती है।

अरावली व राजस्थान की अन्य प्रमुख पहाडियाँ:-

भाकर -सिरोही
पहाडी का नाम भाकर/भाकरी - जालौर
पहाडी का नाम मगरा/मगरी -उदयपुर
पहाडी का नाम डूंगर/डूंगरी - जयपुर

1. त्रिकूट पहाडी.(सोनार दुर्ग) - जैसलमेर
2. त्रिकूट पर्वत(कैलादेवी) - करौली
3. चिडियाटूंक पहाडी(मेहरानगढ) - जोधपुर
4. छप्पन पहाडियाँ - बाडमेर

नोट:-1

56 पहाडी या मोलाकार - नाकोडा पर्वत- राजस्थान का मेवानगर

पिपलूद पहाडी-राजस्थान का लघु माउण्ट आबू

बाडमेर-जालौर की पहाडियों में सर्वाधिक "ग्रेनाइट व रायोलाइट चट्टानें" पाई जाती है।

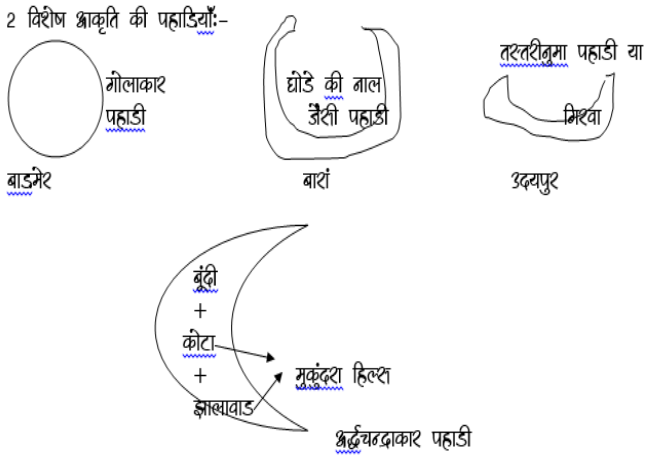

"गिरवा" का शाब्दिक अर्थ- पर्वतों की मेखला(श्रंखला) जो द. अरावली में उदयपुर में स्थिति है

5. खुंडा पर्वत – जालौर
* खुन्धा माता मन्दिर
* प्रथम रोप-वे(2006)
* भालू संरक्षित क्षेत्र

6. भाकर – सिरोही
दक्षिणी अरावली में सिरोही में स्थित छोटी व तीव्र ढाल वाली पहाडियों को "भाकर" कहा जाता है।

6. हिरण मगरी – उदयपुर
7. मोती मगरी(फतेह सागर) – उदयपुर
8. मछली मगरा(पिछोला झील) – उदयपुर.
द्वितीय रोप-वे(2008)
9. जरगा –उदयपुर
10. रागा पहाडी –उदयपुर

नोट:- देशहरी

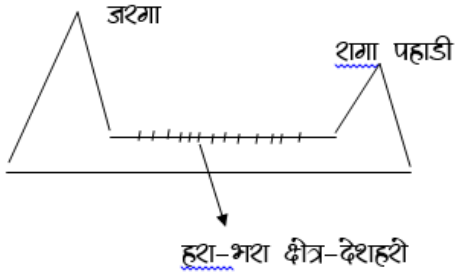

दक्षिणी अरावली में जरगा-रागा पहाडियों के मध्य हरे-भरे क्षेत्र को उदयपुर में "देशहरी" कहा जाता है।

अरावली की दिशा:- दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व

पीपली नाल(सिरोही):- राजस्थान की सर्वाधिक ऊँचाई वाली नाल है

बर नाल से पूर्णतः राजस्थान में अवस्थित सबसे लम्बा राजमार्ग एन. एच. 112 गुजरता है।

पर्वतों में स्थित संकरे मार्गो को दर्रे कहा जाता है जिन्हे हिमालय क्षेत्र में ला, अरावली क्षेत्र में नाल तथा पठारी क्षेत्र में घाट के नाम से जाना जाता है।

नाल को मान्यता RSRTC देती है ।

पूर्वी मैदानी प्रदेश:-

पूर्वी मैदानी प्रदेश की भौतिक विशेषताऐं निम्नांकित है-

1. यह राजस्थान का कुल क्षेत्रफल का लभगग 23 प्रतिशत तथा जनसंख्या का लगभग 39 हिस्सा धारण करता है।
2. अरावली पर्वत माला के पूर्वी भाग में गंगा एवं यमुना के मैदानी भाग से मिला हुआ है। इसे यदि नदी बेसिन प्रदेश कहा जाए तो उपयुक्त होगा।
3. विस्तार यह मुख्य रूप से अग्रलिखित जिलो में विस्तृत है-
अलवर, भरतपुर, करौली, दौसा, सवाईमाधोपुर, (ABCD) जयपुर, दौसा, टोंक, डूंगरपुर, बाँसवाडा, प्रतापगढ आदि।
4. जलवायु- यहाँ उपार्द्र जलवायु मिलती है।
5. वर्षण:- 50-80 सेमी.
6. तापक्रम एवं वायुदाब व वायुवेग सामान्य पाये जाते है
7. वनस्पति:- यहाँ प्रमुख रूप से धोक/धोकडा, शीशम, सागवान, साल टीक, आम, जामुन, पलाश, तेंदू, कत्था इत्यादि पाये जाते है।
8. कृषि- यहाँ गेहूँ, चावल, चना, बाजरा, सरसो, विभिन्न दालें, गन्ना, ग्वार, धनिया, जौ इत्यादि की कृषि की जाती है
9. खनिज:- यहाँ प्रमुखतः अधात्विक खनिज पाये जाते है। संगमरमर यहाँ बहुतायत में पाया जाता है।
10. मृदा:- यहाँ पर जलोढ या कांप एवं दोमट मिट्टी पायी जाती है।
11. उच्चावच:- सामान्यतः चम्बल को छोडकर शेष मैदानी भाग मिलता है। जिसका ढाल पश्चिम से पूर्व एवं दक्षिण से उत्तर की ओर है।(अपवाद-माही)

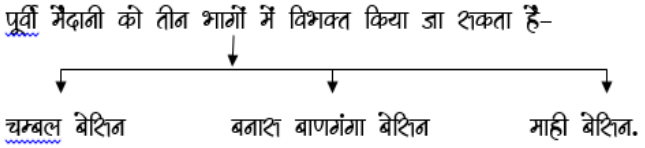

1. चम्बल नदी बेसिन :-

यह मुख्यतः कोटा, चित्तौड़गढ, सवाईमाधोपुर, करौली, बूंदी एवं धोलपुर जिलों में आता है।

इसका ढाल दक्षिण से उत्तर, पश्चिम से पूर्व तथा उत्तर पूर्व की ओर है।
चम्बल की सहायक नदियां :- बनास, सीप, पार्वती, कालीसिंध, परवन,

उच्चावच:-

(i) उत्खात स्थलाकृति- चम्बल नदी बेसिन क्षेत्र में नदी ढाल तीव्र होने और कोमल कठोर चट्टानों के समान्तर या एकान्तर क्रम से निर्मित गड्ढो वाली ऊबड-खाबड स्थलाकृति उत्खात कहलाती है।

(ii) डांग- चम्बल नदी बेसिन क्षेत्र में पायी जाने वाली ऊबड खाबड उत्खात स्थलाकृति, बीहड भूमि तथा अनुपजाऊ गहरी भूमि क्षेत्र स्थानीय भाषा में डांग कहलाता है। यहां दस्यु सरगना निवास करते है ।

(iii) खादर:- चम्बल नदी बेसिन में लगभग 5 से 30 मी. गहरे गड्डे एवं बीहडो से निर्मित भूमि स्थानीय भाषा में खादर कहलाती है।

सर्वाधिक बीहड एवं डांग क्षेत्र करौली एवं सवाईमाधोपुर में है ।

2. बनास व बाणगंगा मैदान:-

(1) बनास मैदान:- दो भागो में बंटा हुआ है।

- दक्षिणी मैदान
  - मेवाड मैदान
  - विस्तार:-राजसमन्द, भीलवाडा, चित्तौड
- उत्तरी मैदान
  - मालपुरा-करौली मैदान
  - विस्तार:-अजमेर, टोंक, सवाई माधोपुर

नोट:- बनास के मैदान में मुख्यतः ''भूरी मिट्टी'' पाई जाती है।

(2) बाणगंगा मैदान:-
विस्तार- जयपुर-दौसा-भरतपुर
मिट्टी- जलोढ

(3) पीडमॉट का मैदान:-
अरावली पर्वत श्रेणी में देवगढ(राजसमंद) के पास का निर्जन का टीलेनुमा भाग पीडमॉट कहलाता है।

(4) माही बेसिन:-
इसे ''माही का मैदान'', ''छप्पन का मैदान'' तथा ' बागड प्रदेश' भी कहते है। यह बेसिन डूँगरपुर, बाँसवाडा प्रतापगढ में छप्पन गाँवो एवं छप्पन नदी नालों के मध्य फैला हुआ है इस लिए इसे छप्पन का मैदान कहा जाता है।

ढाल- इसका ढाल पहले उत्तर की तरफ फिर पश्चिम की तरफ है।

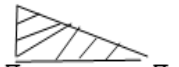

राजस्थान में सर्वाधिक तीव्र ढाल माही एवं उसकी सहायक नदियों का ही है।

सहायक नदियाँ

Shortcut सीजा ए अएचा
सीम जाखम एरण अनास एराव चाप

सीम जाखम एवं माही नदियाँ मिलकर 'बेणेश्वर' नामक स्थान पर त्रिवेणी संगम बनाती है जहाँ माघ पूर्णिमा को 'आदिवासियों' का कुंभ' उपनाम से मेला भरता है।

कांठल या कांठे का मैदान:- माही नदी के कांठे पर स्थित मैदान को कांठल कहा जाता है।

दक्षिणी-पूर्वी पठारी प्रदेश/हाडौती प्रदेश

राजस्थान के भौतिक प्रदेशो में चौथा भाग है-दक्षिणी-पूर्वी पठारी प्रदेश ।

यह राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी भाग में स्थित पठारी भाग है जो मालवा के पठार का ही विस्तार है ।

मालवा का पठार-मध्यप्रदेश
मालवा का मैदान-द. पंजाब

1. विस्तार - यह राजस्थान के कोटा, बूँदी, बारा, झालावाड एवं चित्तौडगढ के कुछ भाग में विस्तृत है।
2. क्षेत्रफल एवं जनसंख्या:- यह क्षेत्र राज्य का 7 प्रतिशत क्षेत्रफल एवं लगभग 11 प्रतिशत जनसंख्या को धारण करता है।
3. जलवायु:- यहाँ आर्द्र एवं अतिआर्द्र जलवायु पायी जाती है। यहाँ सापेक्षतः राजस्थान में सबसे कम तापक्रम, उच्च वायुदाब, कम वायुवेग एवं अधिक आर्द्रता स्थिति पायी जाती है।
4. वर्षण:- यहाँ लगभग 80-120 सेमी के मध्य वर्षण होता है।
5. वनस्पति:- यहाँ मुख्यत पतझडी वनस्पति पायी जाती है, जैसे धोक/धोकडा, शीशम, आम, महुआ, नीम, सागवान, साल इत्यादि।
6. कृषि:- यहाँ मुख्यतः कपास, गन्ना, विभिन्न दाले गेहूँ, चावल, सरसो, फ्लो, सब्जियो, जौ आदि की पैदावार की जाती है।
7. मृदा:- यहाँ लावा पठार के कारण मध्यम काली, लाल, पीली, चट्टानी तथा चम्बल बेसिन क्षेत्र में जलोढ मृदा पायी जाती है।
8. उच्चावच:- सामान्यतः पठारी प्रदेश, कही-कहीं नदी बेसिन प्रदेश में मैदान तथा चम्बल नदी बेसिन क्षेत्र में उत्खात स्थलाकृति व डांग क्षेत्र पाया जाता है।
9. खनिज:- प्राचीन गोंडवाना भूमि का भाग होने के कारण यहाँ मुख्यत धात्विक तथा कहीं-कही अधात्विक खनिज भी पाये जाते है, जैसे गारनेट, अभ्रक, कोटा स्टोन, इत्यादि।

इस भौतिक प्रदेश को दो भागो में विभक्त किया जा सकता है:-

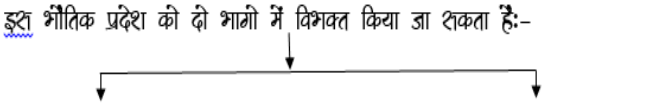

विंध्यन कगार:-

यह कगार भूमि विन्ध्याचल एवं अरावली का मिलन स्थल है। यह धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर, चित्तौडगढ, कोटा, भीलवाडा आदि जिलो में बालुका पत्थरों से निर्मित है। इन कगारो का मुख बनास एवं चम्बल नदी के बीच दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व की ओर है तथा बुन्देलखण्ड से पूर्व की ओर फैले हुए है ।

एक अन्य मत के अनुसार हाडौती पठार को पाँच धारातलीय प्रदेशो में विभक्त किया जाता है-

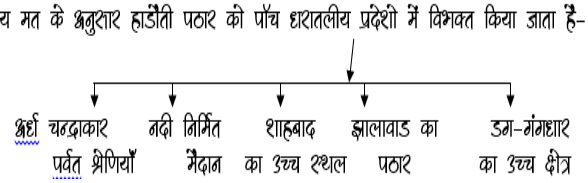

इस प्रदेश में अर्द्धचन्द्राकार रूप में पर्वत श्रेणियों का विस्तार है जो क्रमशः बूँदी एवं मुकन्दवाडा की पहाडियों के नाम से जानी जाती है। इस श्रेणी का सर्वोच्च शिखर चन्दवाडी क्षेत्र में 517 मी. ऊँचा है। इस पठार के पूर्वी भाग में शाहबाद का उच्च क्षेत्र तथा दक्षिण-पूर्वी भाग डग-मंगधार का उच्च क्षेत्र है वही मुकन्दवाडा श्रेणी के दक्षिण में 300-400 मी. ऊँचाई का झालावाड का पठारी प्रदेश है।

राजस्थान के प्रमुख पठार -

1. उडिया पठार - माउण्ट आबू, सिरोही
   ऊंचाई 1360 मी. राजस्थान का सबसे ऊंचा पहाड

2- आबू पठार - सिरोही
   ऊंचाई 1200 मी. दूसरा ऊंचा पठार

3- उपरमाल का पठार - भैसरोड गढ से बिजौलिया के मध्य का पठार
   अरावली को विन्ध्य पर्वत से अलग करता है ।

4- दक्कन का लावा पठार - बूंदी, भीलवाडा फैला हुआ ।
   कोटा का त्रिकोणीय कांप बेसिन इसका हिस्सा है ।

5. भौराट का पठार - उदयपुर का सबसे ऊंचा पठार
   गोगुंदा से कुम्भलगढ के मध्य स्थिति

6- लसाडिया का पठार - उदयपुर - राजसमंद के मध्य
   राजस्थान का सबसे अधिक क्षेत्रफल वाला पठार
   यह कटा - फटा और विच्छेदित है ।

7- मैसा पठार - चित्तौड का किला इस पर स्थित है ।

अपवाह तंत्र

राजस्थान के अपवाह तंत्र को 3 भागों में बांटा जाता है।

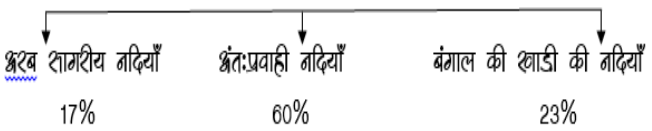

नोट :-

- राजस्थान में अंतः प्रवाही नदियां सर्वाधिक पाई जाती हैं।
  कारण- यहां मरूस्थल का विस्तार सर्वाधिक है।
- अरावली को राजस्थान की जल विभाजक रेखा कहा जाता हैं क्योंकि यह बंगाल की खाडी और अरब सागर की नदियों को अलग करती है।
- राजस्थान में सतही जल या नदी जल देश का 1.16 प्रतिशत है।
- भूमिगत जल राजस्थान में देश का 1.69 प्रतिशत है ।

भूमिगत जल-	
कुल ब्लॉक	249
डार्क जोन	198
क्रिटिकल डार्क जोन	140
सुरक्षित जोन	25

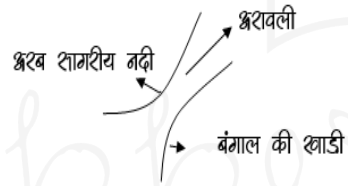

A. अरब सागरीय नदियाँ :-

(1) लूनी (2) माही (3) पश्चिमी बनास (4) साबरमती

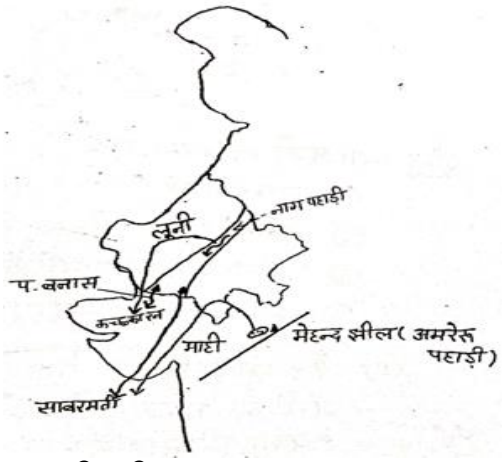

1. लूनी नदी :-
   - उद्गम – नाग पहाडी (अजमेर)
   - संगम – कच्छ का रन (गुजरात)
   - लम्बाई – 495 किमी. (राजस्थान में– 350 किमी.)
   - अपवाह क्षेत्र –

Trick:- अ प ना ब जा ज
अजमेर पाली नागौर बाडमेर जालौर जोधपुर

- सहायक नदियाँ -

Trick:- सुकी बांडी खारी जो जवाई रे मिली
सुकडी बांडी खारी जोजडी जवाई सागी मिठडी लीलडी + गुहिया

नोट :-

(1) लूनी नदी के उपनाम–
   a. सागरमती
   b. लवणवती
   c. आधी मीठी–आधी खारी नदी
   d. अन्तःसलीला नदी (कालिदास ने लिखा)

(2) रेल/नाडा–
   – लूनी नदी के अपवाह क्षेत्र को कहा जाता है।
   – इसका विस्तार मुख्यतः जालौर में है।

(3) जोजडी–
   – लूनी नदी में दायीं ओर से मिलने वाली एकमात्र नदी
   – लूनी की एकमात्र सहायक नदी जिसका उद्गम अरावली से नहीं होता है।

(4) बालोतरा (बाडमेर)–
   – लूनी का पानी खारा होता है।
   – लूनी में बाढ इसी क्षेत्र में आती है ।

(5) राजस्थान के कुल अपवाह तंत्र में लूनी का योगदान 10.40 प्रतिशत है।

लूनी नदी से संबंधित बांध –

a. जसवंत सागर/पिचियाक बांध – जोधपुर (लूनी)
b. हेमावास बांध – पाली (बांडी)
c. जवाई बांध – पाली (जवाई)
d. बांकली – जालौर (सुकडी)

नोट :-

जवाई बांध :-

पाली में स्थित है जो पश्चिमी राजस्थान की सबसे बडी पेयजल परियोजना है। इस कारण इसे मारवाड का अमृत सरोवर कहा जाता है।

जवाई बांध में पानी की कमी होनेपर जलापूर्ति सेई जल सुरंग से की जाती है।

सेई जल सुरंग :-

- राजस्थान की प्रथम जल सुरंग
- स्थिति - उदयपुर से पाली
- जवाई में जलापूर्ति

2. माही नदी :-

- उद्गम - मेहन्द झील, अमरेरू पहाडी (विंध्याचल पर्वतमाला, मध्यप्रदेश)
- संगम - खम्भात की खाडी (गुजरात)
- लम्बाई - 576 किमी. (राजस्थान में- 171 किमी.)
- अपवाह क्षेत्र - बांसवाडा, डूंगरपुर
- सहायक नदियाँ -

Trick:- ए (ऐराव) अरना (अरनारा) चारपाई (चाप) में (मोरिन) सी (सोम) जा (जाखम)

नोट :-

(1) माही नदी के उपनाम:-

a. वागड की गंगा
b. आदिवासियों की गंगा
c. कांठल की गंगा
d. दक्षिणी राजस्थान की स्वर्णरेखा नदी

(2) त्रिवेणी संगम:-

बेणेश्वर धाम (नवा टापरा/नवाटपुरा)
सोम माही जाखम

- माघ पूर्णिमा को मेले का आयोजन होता है जिसे कुम्भ या आदिवासियों का कुम्भ कहा जाता है।
- इस मेले में सर्वाधिक आने वाली जनजाति = भील

(3) कर्क रेखा को 2 बार पार करने वाली विश्व की एकमात्र नदी

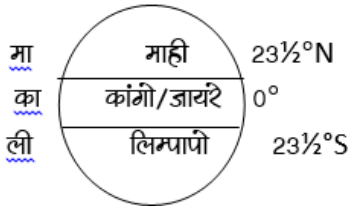

(4) राजस्थान के दक्षिण से प्रवेश कर पश्चिम की ओर बहने वाली नदी- माही

(5) माही की बांध परियोजनाएं-

a. माही बजाज सागर बांध परियोजना	-	बांसवाडा	उद्गम
b. कागदी पिकअप बांध	-	बांसवाडा	
c. कडाना बांध	-	गुजरात	
d. सोम-कागदर परियोजना	-	उदयपुर	संगम की ओर
e. सोम-कमला अम्बा	-	डूंगरपुर	
f. जाखम बांध	-	प्रतापगढ	

माही बजाज सागर बांध परियोजना :-

- यह राजस्थान-गुजरात के द्वारा संचालित बहुउद्देशीय परियोजना है। (45 : 55)
- स्थिति- बोरखेडा (बांसवाडा)
- विशेष -
- राजस्थान की सबसे लम्बी बांध परियोजना (3.109 m)
- आदिवासी क्षेत्र में सबसे बडी परियोजना
- इस परियोजना से उत्पादित जल विद्युत

  I Stage 25 MW × 2 Units = 50 MW
  II Stage 45 MW × 2 Units = 90 MW
  Total 140 MW
- राजस्थान के आदिवासी क्षेत्र को विद्युत आपूर्ति की जाती है।

जाखम बांध :-

- स्थिति - सीतामाता अभ्यारण्य (प्रतापगढ)
- यह राजस्थान का सबसे ऊंचा बांध (81 m)

3. पश्चिमी बनास नदी :-

- उद्गम- नया सानवास (सिरोही)
- संगम- लिटिल कच्छ रन (गुजरात)
- अपवाह क्षेत्र- सिरोही
- सहायक नदी- कूकडी, सूकली